प्रातः क्लास 27-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। इनको रूहानी बाप नहीं कहेंगे। आज के दिन को सतगुरुवार कहते हैं। गुरुवार कहना भूल है। सतगुरुवार। गुरुलोग तो बहुत ही ढेर हैं। सतगुरु एक ही है। बहुत हैं जो अपन को गुरु भी कहते हैं। सद्गुरु भी कहते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो गुरु और सद्गुरु में तोफर्क है। सत्य माना सत्य। सच्चा एक ही निराकार बाप को कहा जाता है। न कि मनुष्य को। मनुष्य लोग तो जो बोलते हैं झू० ही बोलते हैं। यह दुनिया ही झूठी है। भल कितना भी बड़ा गवर्नर है, राजा-रजवारा है। परन्तु ज्ञान के बारे में जो कुछ बोलते हैं वह सभी झूठही बोलते हैं। सच्चा ज्ञान तो एक ही वार ज्ञान सागर बाप देते हैं। मनुष्य मनुष्य को कब ज्ञान दे न सके। सच्चा है ही एक बाप। उनका नाम ब्रहमा है। यह कब किसको ज्ञान दे न सके। ब्रहमा में ज्ञान कुछ भी नहीं था। अभी भी कहेंगे इनमें ज्ञान नहीं है। सम्पूर्ण पूरा ज्ञान तो ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा में ही है। अभी ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो अपन को सतगुरु कहला सके। सद्गुरु भी न एपस्युलिटली सत्य। तुम सत्य बन जावेंगे तो फिर यह शरीर न रहेगा। मनुष्य को कब सतगुरु कह नहीं सकते। मनुष्यों में तो पाई की भी ताकत नहीं है। यह भी (बाबा) मनुष्य बैठा है ना। इनमें कुछ भी ताकत नहीं। यह खुद भी कहते हैं मैं तुम्हारे जैसा मनुष्य हूं। मैं भी पढ़ताहूं। इसमें ताकत की बात उठ नहीं सकती। यह तो आप पढ़ाते हैं। न कि ब्रहमा। यह ब्रहमा भी उन से पढ़कर फिर पढ़ाते हैं। तुम ब्रहमाकुमार कुमारियां कहलानेवाले भी परमपिता परमात्मासद्गुरु से पढ़ते हैं। तुमको उन से ताकत मिलती है। ताकत का मतलब यह नहीं कि कोई को घुसा मारो जो गिर परे ताकत की और कोई बात ही नहीं। यह है रूहानी बात। याद के बल से तुम शान्ति को पाते हो। और पढ़ाई से तुमको सुख मिलता है। जैसे और टिचर्स तुमको पढ़ाते है वैसे बाप भी पढ़ाते हैं। यह भी पढ़ते हैं। स्टुडन्ट है। देहधारी जो भी हैं वे सभी स्टुडन्ट हैं। बाप को तो देह नहीं है। वह है निराकार। वही आकर पढ़ाते हैं। जैसे और स्टुडन्टस पढ़ते हैं वैसे तुम भी पढ़ते हो। इसमें मेहनत की बात ही नहीं। पढ़ने समय हमेशा ब्रहमचर्य में रहते हैं। ब्रहमचर्य में पढ़कर जब पूरा करे तब बाद में विकार में पड़ते हैं। मनुष्य तो मनुष्य जैसे ही देखने में आते हैं। कहेंगे यह फ्लाना आदमी है। यह एल० एल० बी० है यह एम० एल० ए० है। पढ़ाई प्रेक्टीकल मिल जाती है। सिकल तो वही है। उस जिस्मानी पढ़ाई को तोतुम जानते हो। साधु सन्त आद जो भी शास्त्र पढ़ते हैं पढ़ाते हैं उनमें कोई भी बड़ाई नहीं। उससे कोई को शान्ति मिल नहीं सकती। खुद भी शान्ति के लिए धक्का खाते हैं। जंगल में अगर शान्ति होती तो फिर वापस क्यों लौटते। मुक्ति को तो कोई पाता ही नहीं। जो भी अच्छे2 नामी-ग्रामी कृष्ण परमहंस आद हो कर गये हैं वह भी सभी पुनर्जन्म लेते2 नीचे ही आये हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति को कोई भी पाते नहीं। तमोप्रधान हो बनना है। देखने में तो कुछ भी नहीं आता। मनुष्य ही मनुष्य हैं। कोई से भी पूछो तुमको क्या मिलता है? गुरु से। कहेंगे थोड़ी शान्ति मिलती है। परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। शान्ति का अर्थ ही नहीं जानते। अभी तुम बाबा ज्ञान का सागर है। और कोई साधु सन्त गुरु आदशान्ति के सागर है नहीं। शान्ति कोई दे न सके। मनुष्य किसको शान्ति दे न सके। तुम बच्चों को तो पहले2 यह निश्चय करना है शान्ति का सागर बाप है जो हमको पढ़ाते हैं। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है वह भी बाप ने समझाया है। शान्ति के सागर ही तो शान्ति देंगे ना। मनुष्य मनुष्य को कुछ भी सुख वा शान्ति दे न सके। बाप से तुम बच्चों को ही यह पढ़ाई मिलती है। यह है उनका रथ। तुम्हारे जैसा ही स्टुडन्ट है। यह भी गृहस्थ व्यवहार में रहने वाला था। सिर्फ बाप को लोन दिया है। सो भी वानप्रस्त अवस्था में। तुमको कहते हैं इसने खुद तो बहुत ही विकार के सुख देखे हैं बूढ़ा हुआ तो कहते हैं यह छोड़ो। अरे परन्तु यह थोड़े ही समझाते हैं। तुमको समझाने वाला तो वही बाप है ना। वही बाप कहते हैं सभी को निर्विकारी बनना है। जो खुद नहीं बन सकते हैं तो फिर अनेक प्रकार की बातें करेंगे। गालियां भी देंगे। समझते हैं हमारा जन्म-जन्मान्तर का भूत तो बाप का वरसा मिला है वह छूड़ाते हैं। अभी

छुड़ाता तो वह बेहद का बाप है ना। इनको भी उसने ही छुड़ाया। यह भी तो विकारी थे ना। इतने बच्चे तब कहां से निकले। आसमान से निकले क्या। बच्चों को भी बचाने की कोशिश की। जो निकल सके उनको निकाला। तो अभी तुम बच्चों को पढ़ाने वाला कोई मनुष्य नहीं है। कहते हैं इसमें महान ताकत है। बाबा कहते हैं हमारे में कुछ भी ताकत नहीं है। झूठ बोलते हो। सर्वशक्तिवान तो एक ही निराकार बाप को कहा जाता है। और किसको भी नहीं कहा जाता। मैं सर्वशक्तिवान नहीं हूं। नहीं हूं। सर्वशक्तिवान बाप ही हैं। वही तुमको नालेज दे रहे हैं। बाप ही समझाते हैं यह विकार ही तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन है। इनको छोड़ो। फिर जो नहीं छोड़ सकते तो कितना उस पर झगड़ा होता है। माईयां भी कोई2 ऐसी निकल पड़ती है जो विकार के लिए हंगामा करता है। उनके लिए नाम है सुपनखा, पुतना। यह असुरों के नाम हैं। इस समय है ही आसुरी सम्प्रदाय। अभी तुम हो संगम युग पर। आसुरी सम्प्रदाय यह भी नहीं जानते कि यह पुरुषोत्तम संगम युग है। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। बहुत हैं जिनको तो निश्चय पूरा है। कोई को सेमी निश्चय है। कोई को 100% कोई को 80% कोई को 60% कोई को 50% कोई को 1%। ऐसे भी हैं। अभी भगवान श्रीमत देते हैं। बच्चे मुझे याद करो। यह है बाप की बड़ा परमान। निश्चय हो तब तो उस परमान पर भी चलें। बाप कहते हैं हे मीठे बच्चों तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। इनको याद नहीं करना है। मैं नहीं कहता। बाबा मेरे द्वारा तुमको कहते हैं। जैसे तुम बच्चे पढ़ते हो वह भी पढ़ता है। सभी स्टुडन्टस हैं। पढ़ाने वाला एक ही टीचर है। वह सभी मनुष्य पढ़ाते हैं। यहां तुमको ईश्वर पढ़ाते हैं। तुम आत्मायें पढ़ते हो। तुम्हारी आत्मा फिर पढ़ाई है। इसमें आत्माभिमानी बहुत2 बनना है। बैरीस्टर इंजीनियर आदि आत्मा ही बनती है। आत्मा को अभी देह-अभिमान आ गया है। आत्माअभिमानी बदली देहअभिमानी बन पड़ी है। जब आत्माभिमानी हो तब तो विकारी नहीं कहला सकते। उनको कब विकार का ख्याल भी नहीं आयेगा। देहअभिमान में ही विकार का ख्याल आता है। मैं विकार करूं। क्योंकि विकारी है तो विकार की ही दृष्टि से देखते हैं। देवताओं की कब विकार की दृष्टि नहीं हो सकती। ज्ञान से फिर दृष्टि को बदल जाती है। सतयुग में। ऐसे थोड़े ही प्यार नहीं करेंगे। डांस करेंगे, भाकी आदि पहनेंगे। विकार प्यार करेंगे परन्तु विकार की बास नहीं। जन्म जन्मान्तर विकार में गये तो वह नशा बहुत मुश्किलात निकलती है। बाप निर्विकारी बनाते हैं। कई बच्चियां पूरा निश्चय कर लेती है बस हमको तो पूरा निर्विकारी बनना है। हम अकेले थे। अकेले हो जाना है। उनको कोई थोड़ा टच करेंगे तो भी अच्छा न लगेगा। कहेंगे यह हमको क्यों हाथ लगाते हैं। इन में विकार की बास है। विकारी हमको टच न करे। इस मंजिल पर पहुंचना है। अभी कोई पहुंचा नहीं है। यह भी कहता है मैं नहीं पहुंचा हूं। अभी टाईम पड़ा है। देह तरफ बिल्कुल दृष्टि ही न रहे। वह कर्मातीत अवस्था पिछाड़ी में होगी। अभी ऐसा नहीं है कि सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं। मंजिल है। अभी तो भाकी पहनते हैं तो भी कहता हूं शिव बाबा को याद कर भाकी नहीं पहनते हो तो तुम व्यभिचारी ठहरे। इनको भाकी की दरकार ही नहीं। यह शरीर तो भाकी आदि से तंग हो जाते हैं हो जाती है। अभी तो बच्चे थोड़े हैं। ढेर बच्चे हो जावेंगे कहां तक भाकी पहनेंगे। यह सभी बन्द हो जावेगा। उरकार ही नहीं है। आधा कल्प से हीरे हुये हैं। भक्ति मार्ग में आवाज है ना। तुम ही से बैठूं तुम्ही से खाऊं तो वह आवाज पकड़ लिया है। इस भाकी के कारण ही कितना नाम बदनाम हुआ है। आर्यसमाजी कितने दुश्मन हैं। समझते हैं शिव तो है निराकार। उनको तो भाकी की दरकार ही नहीं। उनको तो शरीर ही नहीं है। यह क्यों भाकी पहनते हैं। ऐसे बहुत आते हैं स्त्री ज्ञान में है पुरुष नहीं है तो स्त्री को भाकी पहनता हुआ देख पुरुष तो जलने लग पड़ते हैं। फिर उनको बाबा कह देते भाकी न पहनो। तुम्हारे पति को निश्चय नहीं है। 100 % निश्चय कोई को है जो बने हैं। फिर भी बाप के श्रीमत पर चल नहीं सकते हैं। बाप हमेशा कहते हैं अ बच्चे अपने को आत्मा समझो। शरीर यह दम्ब है जिससे तुम पार्ट बजाते हो। कई कहते हैं इनमें शक्ति है। परन्तु इसमें तो शक्ति की कोई बात ही नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। - - - - - - -

जैसे और पढ़ते हैं वैसे यह भी पढ़ते हैं। पवित्रता के लिए कितना माथा मारते हैं। बड़ी मेहनत है। इसलिए बाप कहते हैं एक दो आत्मा ही देखो। सतयुग में भी तुम आत्माभिमानी रहते हो। वहां तो रावणराज्य है नहीं। विकार की बात ही नहीं। यहां रावण राज्य में सभी विकारी हैं। इसलिए बाप आकर निर्विकारी बनाते हैं। न बनेंगे तो सजा खानी पड़ेगी। आत्मा पवित्र बनने बिगर ऊपर जा न सके। हिसाब-किताब चुकुत करना होता है। फिर पद भी कम हो जाता। यहराजधानी स्थापन हो रही है ना। बच्चे जानते हैं स्वर्ग में एक आदी सनातन देवी-देवताओं का राज्य था। पहले2 तो जरूर एक राजा-रानी ही होगा ना। फिर उनके बच्चे बड़े होंगे वृधि को पावेंगे। पहले2 तो एक ही होगा। एक ही डिनायस्टी होगी। यह तो जरूर है प्रजा ढेर बनती है। उस में अवस्थाओं में फर्क पड़ेगा। जिनको पुरा निश्चय ही नहीं वह इतना पढ़ भी न सके। पवित्र भी बन न सके। आधा कल्प के पतित एक जन्म में 21 जन्मों लिए पावन बने मासी का घर है क्या। मुख्य है ही काम की बात। क्रोध आद का इतना हर्जा नहीं है। बच्चे आद गिर पड़ते हैं तो जरूर बाप को याद नही करते हैं। बाप को याद पक्की हो जावेगी। फिर और तरफ कोई बुधि नहीं जावेगी। बहुत ही ऊंच मंजिल है। पावित्रता की बात सुनकर ही आग में जल मरते हैं। कहते हैं यह बात तो कब कोई ने कही नहीं। कोई शास्त्र में नहीं। बड़ा ही पुश्किल समझते हैं। वह तो है ही निवृति मार्ग का धर्म अलग। उनको तो पुनर्जन्म ले फिर सन्यास धर्म में ही जाना है। वही संस्कार ले जाते हैं। तुमकोतो घर-बार छोड़ना नहीं है। समझाया जाता है भल घर में रहो। उन्हों को भी समझाओ। अभी है संगम युग। पवित्र बनने बिगर सतयुग में देवता बन न सके। थोड़ा भी ज्ञान सुनते हैं तो स्वर्ग में आ जाते हैं। प्रजा तो ढेर होती है ना। सतयुगमें वजीर भी होते नहीं। क्योंकि बाप सम्पूर्ण नया बना देते हैं। वजीर आद चाहिए अज्ञानियों को। कोई पी०ए० मांगते हैं तो कोई क्या मांगते हैं। वह क्या करते हैं। शरीर की सम्भाल करते हैं। एक दो को मारते कैसे हैं। दुश्मनी का स्वभाव कितना कड़ा है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम यह पुराना घर छोड़ जाकर दूसरा लेते हैं। कोई बड़ी बात है क्या। वह दुःख से मरते हैं। तुमको बहुत ही सुख से बाप की याद में जाना है। जितना मुझ बाप को याद करेंगे तो और सभी कुछ भूल जावेंगे। कोई भी याद न रहेगा। परन्तु यह अवस्था तब हो जब उनका निश्चय हो। निश्चय नहीं तो जरा भी याद ठहर न सके। नाम मात्र सिर्फ कहते हैं निश्चय है नही तो याद काहे को करेंगे। सभी को एक जैसा निश्चय तो नहीं है ना। माया निश्चय से भी हटा देती है। जैसे ई के वैसे बन जाते हैं। पहले2 तो निश्चय चाहिए। बाप में संशय होगा क्या कि यह हमारा बाप नहीं है। बेहद का बाप ही ज्ञान देते हैं ना। यह तो कहते हैं मैं भी सृष्टि के रचयिता और रचना को नहीं जानता था। मेरे को कोई तो सुनावेंगे ना। मैंने 12 गुरु किये। उन सभी को छोड़ना पड़ा। गुरु ने तो ज्ञान दिया नहीं। सद्गुरु ने अचानक आकर प्रवेश किया। समझा पता नहीं क्या होने का है। गीता में भी है ना अर्जुन को साक्षात्कार कराया। तो जरूर उनको निश्चय बैठा होगा। अर्जुन की बात है नहीं। यह तो रथ है ना। उन्हों ने फिर अर्जुन भी रथ में बिठाये दिया है। कृष्ण को भी रथ में बिठाया है। अर्जुन को कृष्ण ने ज्ञान दिया। है तो कुछ भी नहीं। बाप समझाते हैं बच्चे गीता भी झूठी है। यह भी पढ़ा था ना। बाप ने प्रवेश किया। साक्षात्कार भी किया। यह तो बाप ही ज्ञान देने वाला है। कृष्ण की गीता तो है नहीं। यह तो झूठ हो गई तो इस गुसे में गीता को फेंक दिया। बाप ज्ञान का सागर है हमको तो वही यह बनावेंगे ना। बस उस समय गुसा चढ़ा। अभी तुम समझते हो गीता झूठी तो सभी शास्त्र झूठे। गीता है माई-बाप। वह बाप ही है जिसको तमेवमाताश्चपिता ..... कहते हैं। वह रचना रचते हैं एडाप्ट करते हैं ना। यह भी तुम्हारे जैसा है। बाप कहते हैं इनकी भी वानप्रस्त अवस्था होती है। तब मैं प्रवेश करता हूं। कुमारी तो है ही पवित्र। उनके लिए सहज है। शादी के बाद कितने सम्बन्ध बन जाते हैं। इसलिए देही अभिमानी बनने में मेहनत लगती है। वास्तवमें आत्मा शरीर से अलग है। परन्तु आधा कल्प देहअभिमानी रहे हैं। बाप आकर अन्तिम

जन्म में देहीअभिमानी बनाते हैं। तो मुश्किल भासता है। पुरुषार्थ करते हैं कितने थोड़े पास होते हैं। आठ रत्न निकलते हैं। कितनी मेहनत है। अपने से पूछो हमारी लाईन क्लीयर है। एक बाप के सिवाय और कुछ आ याद तो नहीं आता। यह अवस्था होगी पिछाड़ी में। अभी तो बहुत ही देहअभिमान में रहते हैं। आत्माभिमानी बनने में बहुत2 मेहनत है। देह अभिमान के कारण की लटकते-चटकते हैं। जो अच्छी पक्की बच्चियां हैं वह तो समझती है हमको कोई हाथ भी न लगावे। पतित ख्यालात वाला होगा तो उसी ख्यालसे हाथ लगावेंगे। तो समझती है ऐसा कब टच भी न करे। हम आत्मा हैं शिव बाबा के हैं। इसको कोई टच भी न करे। ऐसे बहुत कड़े होते हैं। समझना चाहिए इनको शिव बाबासे स्नेह है। विकार के कारण ही अबलाएं कितनी मार खाती है। कोई फिर सुपनखा पतनाएं भी निकलती हैं। तो वह भी बड़ा तंग करती है। अनुभवी तो बाबा है ना। यह है ही वेश्यालय। अभी बाप तुम बच्चों को शिवालय में ले जाते हैं। परन्तु जब वेश्यालय से दिल टूटे ना। यह तो जरा भी ख्यालातन आना चाहिए। तब ही उंच पद पा सकते हैं। ड्रामा अनुसार जिन्हों ने कल्प पहले पद पाया है उन्हों का पुरुषार्थ भी ऐसे ही देखने में आता है। बाप बैठ समझाते हैं हमने यह रथ कैसे कैसा लिया है। पहले तो यह निश्चय चाहिए। निश्चय हो तो उनकी चलन बड़ी अच्छी चले। बहुतों को निश्चय नहीं होता, तो फिर टूट पड़ते हैं। जैसे बेताले हो बैठते हैं। यहां बैठे भी कहां2 बुद्धि जाती रहती है। क्योंकि पक्का निश्चय नहीं। निश्चय बुद्धि तो बड़ा ही अटेन्शन से सुनेंगे। निश्चय बुद्धि बिगर पढ़ाई पढ़ न सके। शिव बाबा में निश्चय हो तब दिल से लगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। कोई2 का तो बहुत ही लव है। कहते हैं यहां ही रह जावें। और भी तो इतने सभी रहते हैं। परन्तु नहीं। उन्हों के साथ तुम रीस क्यों करते हो। बाप कहते हैं नहीं रहना है। अनेक प्रकार के आते हैं। कोई तो ऐसे भी समझते किसकी खातरी होती है। किसको आप मिलता है किसको नहीं मिलता है, भगवान की तो एक भावना होती है। यह भगवान तो हो नहीं सकता। ऐसे भी संशय बुद्धि होकर चले गये। अच्छा फिर दो तीन वर्ष आ जाते हैं पुरुषार्थ में लग पड़ते हैं। फिर वह बातें भूल जाते हैं। बाप जानते हैं जिनके तकदीर में वह तो अवश्य आवेंगे ही। अवस्थाएं तो नीचे-ऊपर तो होती ही रहती है। नई बात नहीं। कल्पपहले भी ऐसे हुआ होगा। फिर ऐसे ही होगा। बाप ने समझाया है मैं ने इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में प्रवेश किया है। जब कि तमोप्रधान हैं। यह अपने को भगवान तो कहते नहीं हैं। पढ़ाने वाला वह बाप ही है। उनको ईश्वरीय पढ़ाई कहा जाता है। जो पढ़ते हैं वही देवता बनते हैं। बाकी तो सभी जैसे जट। देवताओं के आगे जाकर उनकी महिमा गाते हैं। आप सर्व गुण सम्पन्न ... मैं विकारी पापी चर्याहीन हूं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसा बनाता हूं। तो श्रीमत पर चलो। यह तो जानते हैं कल्प पहले जैसे राजधानी स्थापन हुई है। अभी भी होगी। तुम भी पुरुषार्थी हो। यह भी पुरुषार्थी है। यह ब्रह्मा कहते हैं मैं हूं मेरे में कोई ताकत है नहीं। मेरे से भी ज्यादा ताकत तो इन बच्चों में है। तुम सभी को ज्ञान भी इन बच्चों ने दिया है। फिर उनको जिसने दिया उनसे सभी मिलने आते हो। मैं तो कोई से मिलता भी नहीं हूं। इतने सभी को तो तुम बच्चों ने ही लाया है ना। जो सच्चे मददगार हैं वही उंच पद पावेंगे। तो सद्गुरु कोई मनुष्य को नहीं कहा जाता। तुमको सद्गुरु पढ़ाते हैं। तुमको सद्गुरु पढ़ाते हैं। वह निराकार है। यह नहीं पढ़ाते हैं। जो अपने को गुरु कहलाते हैं वह है महान भ्रष्टाचारी। कुल्लेवाले सब में ईश्वर हैं। तो फिर उनको श्री2 कहो। ठिक्कर-भितर सब में परमात्मा है। अच्छा कुल्लेवाले ठिक्कर भितर को याद करेंगे। कितनी मूर्खता है। तब बाप कहते है बड़े बड़े असुर हैं। जिन पर फिर असुर लोग ही फिदा होते हैं। सत्या ही नाश हो जाती। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। इसको कहा जाता है सहज याद महाऋषि कहते हैं शराब भी पीओ, प्याज खा सकते हो। ऐसे लोग चल कैसे सकते। अन्त में सभी फेल हो जावेंगे। तुम हो ब्रह्माकुमार-कुमारियां। कुमार-कुमारियां तो पवित्र ही होते हैं। पवित्रता का ख्याल भी नहीं। कोई दृष्टि नहीं जानी चाहिए। बाप कहते हैं मीठे बच्चों तुम पत्थर बुद्धिइनसालवेन्ट बन पड़े हो फिर सालवेन्ट बनो। तुम यहां ... मालिक बनने। थे जरूर। फिर ... है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।